Pol. Sc

Question - What is Gandhism? Mention the Sources of its Principales.

गाँधीवाद क्या है? इसके सिद्धान्तों के स्रोतों का उल्लेख करें।

महात्मा गाँधी एक आदर्शवादी, अराजकतावादी, मानवतावादी, अध्यात्मवादी तथा कर्मवादी थे। इन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन तथा अर्वाचीन पाश्चात्य दर्शन का सम्मिश्रण किया था। राजशास्त्र को आध्यात्मिक आधार तथा व्यावहारिक राजनीति को नवीन प्रणालियाँ प्रदान की।

मोहन दास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर के एक धार्मिक परिवार में हुआ था। उनके पिता करमचंद गाँधी राजकोट के दीवान थे। माता-पिता के विचार तथा आदर्शों का बचपन में उनपर काफी प्रभाव था। मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु इंग्लैंड गए। इंग्लैंड से लौटकर उन्होंने वकालत शुरू की। 1893 में मुकदमे की पैरवी करने हेतु दक्षिण अफ्रीका गए। वहाँ वे बीस वर्षों तक रहे और जाति तथा रंग भेद के कारण भारतीयों पर अन्याय और अत्याचार वहाँ हो रहा था। उसके विरुद्ध निरंतर और अथक संघर्ष करते रहे। इस अवधि में उन्होंने सत्याग्रह का विश्लेषण तथा शुद्धतावादी अस्त्र का निर्माण किया, सफलता प्राप्त की और वे इस संघर्ष में विजयी हुए।

1915 में महात्मा गाँधी भारत लौट आए। भारत वापसी के पश्चात उनके जीवन का महत्वपूर्ण चरण प्रारम्भ हुआ। 1915 में गोखले के देहांत के उपरान्त साबरमती में गाँधी ने सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। कुछ वर्षों तक सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उनका कार्य सीमित रहा। लेकिन 1919 में हवा का रुख बदला और पूर्ण रूप से राजनीति के क्षेत्र में कूद पड़े। 1920 में लोकमान्य तिलक के मृत्यु के पश्चात देश को एक नेतृत्व की आवश्यकता थी। खिलाफत आंदोलन एवं रौलेट बिल ने गाँधी जी को एक अवसर प्रदान किया। देश की क्रांतिकारी परिस्थितियों को ठीक से समझा, और सत्य और अहिंसा पर आधारित असहयोग आंदोलन की नीति को सर्वोत्तम समझा। उन्होंने एक वर्ष के अन्दर स्वराज्य प्राप्त करने की प्रतिज्ञा दिलाई और देश में हो रहे आंदोलन को हिंसा से बिलकुल मुक्त रखने का आदेश दिया। इसमें महत्वपूर्ण घटना चौरी-चौरा जिसमें हिंसात्मक घटना घटित हुई। गाँधी जी ने आंदोलन को स्थगित कर दिया, नहीं तो सारे देश में हिंसात्मक आंदोलन -

Scanned with CamScanner

फैल जाता। गाँधी जी का यह पहला अहिंसात्मक आन्दोलन था, स्वराज्य घर-घर पहुंचा दिया तथा भारतवासियों को भयमुक्त कर उनकी मानसिक स्थिति में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया।

30 जनवरी 1948 में गाँधी जी नाथूराम गोडसे के गोली के शिकार हुए। इस घटना से पूरा मानव समाज दुःख के सागर में डूब गया। डॉ. स्टेनले जोन्स ने गाँधी जी के मृत्यु पर लिखा था "यदि महात्मा गाँधी को पद चुनने का अधिकार होता। कि मैं किस प्रश्न के ऊपर मरूं तो इससे अच्छा प्रश्न और कोई नहीं हो सकता था। यह उनके जीवन का सुनिश्चित सार है। हत्यारे ने गोलियाँ उनके विचारों का अंत करने के लिए चलाई थी, लेकिन हत्यारे ने महात्मा गाँधी की हत्या करके उन्हें अमर बना दिया। संसार में करोड़ों व्यक्ति आज महात्मा के विचारों से अनुराग रखते हैं, किसी भी मानव ने अपने जीवन के आदर्शों का सार अपनी मृत्यु में इतने अधिक प्रकाश में नहीं पाया।

गाँधीवाद क्या है?

गाँधी जी एक पद्धति निर्माणकर्ता (system-builder) नहीं थे वे निष्पक्ष ~~[illegible]~~ छात्र थे और उनका ढंग मूलतः प्रयोगात्मक और वैज्ञानिक था। पं० नेहरू ने इस संबंध में लिखा है कि हमलोगों में और गाँधी में शायद ही कभी किसी प्रश्न पर वाद-विवाद या बहस होता था। दर्शनशास्त्रीय स्तर पर" विचार विमर्श होता था। हम लेकर मिलकर काम करते थे। विचार विमर्श होता था। हम लेकर मिलकर काम करते थे। गाँधी जी अपने विचारों को कभी क्रमबद्ध करने का प्रयास नहीं किया और अपने विचारों को ~~[illegible]~~ संकलित कर किसी वाद को जन्म नहीं दिया। उन्होंने स्वयं कहा था गाँधी-वाद नाम की कोई वस्तु नहीं है और मैं अपने बाद कोई सम्प्रदाय छोड़ना नहीं चाहता। मैं कभी इस बात का दावा नहीं करता कि मैंने कोई नया सिद्धांत चलाया है। मैंने केवल अपने निजी ढंग से केन्द्रीय सच्चाईयों को अपने नित्यप्रति के जीवन और समस्याओं पर लागू करने की चेष्टा की है, और वह मत, जो मैंने बनाए हैं और वह परिणाम जो मैंने प्राप्त किए हैं, अंतिम नहीं है। यदि हम इसे दर्शन के नाम

से पुकारें इस बात से चिंतित है, जो मैंने कहा आप इसे गाँधीवाद के नाम से नहीं पुकारेंगे, इसमें कोई वाद नहीं है। केवल एक अवसर पर गाँधीजी ने कहा था कि "गाँधी मर सकता है परन्तु गाँधीवाद जीवित रहेगा"। न स्वयं गाँधीजी ने स्वयं गाँधीवाद शब्द का प्रयोग किया था लेकिन उनका अभिप्राय एक वाद का अन्वेषण करना नहीं था। वे केवल यह कहना चाहते थे कि वे इस संसार में रहें या नहीं, सत्य और अहिंसा की ज्योति सदा जलती रहेगी।

अतः हम कह सकते हैं कि गाँधीजी ने किसी वाद को जन्म नहीं दिया। वे किसी वाद या सिद्धान्त के समर्थक नहीं थे। उन्होंने अपने विचारों को कभी भी पूर्ण नहीं माना। वे जीवन पर्यन्त "सत्य का प्रयोग" करते रहे। अपने विचारों को कभी भी अंतिम रूप नहीं दिया। सच्चे अर्थों में गाँधीजी ने नया दर्शन देने का प्रयास नहीं किया बल्कि जीवन को एक नया दृष्टिकोण दिया। जीवन, राजनीति तथा धर्म के प्रति उनका विशेष दृष्टिकोण था तथा उनके निजी विचार थे। यद्यपि स्वयं गाँधीजी ने गाँधीवाद को जन्म नहीं दिया, उनके अनुयायी उनके विचारों और दृष्टिकोणों को क्रमबद्ध कर गाँधीवाद का निर्माण कर रहे हैं। वस्तुतः गाँधीवाद आज एक प्रचलित वाद हो गया है। और राजनीतिक विचारधारा के इतिहास में एक श्रेष्ठ स्थान ग्रहण कर लिया है।

गाँधीजी के विचारों के स्रोत (Sources of Gandhian Thought)

गाँधीजी के विचारों पर हिन्दू धर्म की पुस्तकों तथा पाश्चात्य धार्मिक दार्शनिकों का प्रभाव था। इंगलैंड में सर एडविन अर्नाल्ड की गीता का अनुवाद पढ़ा। इसने उनके दृष्टिकोण को सर्वाधिक प्रभावित किया तथा उन्हें कर्मकांडी बनाया। गीता को अपना "पथप्रदर्शक तथा आध्यात्मिक निर्देश ग्रंथ (Spiritual reference book) मानते थे। उन्होंने कहा भी था "संदेह मुझे घेरते हैं जब हतोत्साहित मेरे और झाँकता है। और जब मुझे क्षितिज में आशारूपी प्रकाश की एक किरण भी दृष्टिगत नहीं होती तो मैं भगवद्गीता की ओर मुड़ता हूँ। और अपने आपको संतोष देने के लिए श्लोक पढ़ लेता हूँ और अनंत चिंताओं के समय भी मुस्कराने लगता हूँ।" गाँधीजी सत्य और अहिंसा के बारे में गीता से बहुत कुछ सीखा। गीता के अतिरिक्त गाँधीजी ने उपनिषद, पतंजलि के योगसूत्र, रामायण

महाभारत तथा बुद्ध और एवं बौद्ध धर्म की पुस्तकों के अध्ययन के सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह में उनकी आस्था दृढ़ हुई और ईसाई धार्मिक ग्रंथों में न्यू टेस्टामेंट और सर्मन ऑन द माउंट का प्रभाव भी गाँधीजी के विचारों पर पड़ा। अहिंसा व प्रतिरोध की शिक्षा उन्हें ईसा मसीह के इन शब्दों में मिली "भगवान इन्हें क्षमा कीजिए, क्योंकि ये नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं"। इसी प्रकार सर्मन ऑन द माउंट से भी शिक्षा ग्रहण किया "यदि कोई तुम्हें एक गाल पर थप्पड़ मारे तो उसके सामने दूसरा गाल भी कर दो।"

'सोक्रेटस' और 'कनफ्यूशियस' की शिक्षाओं का भी प्रभाव गाँधीजी की विचारधाराओं पर पड़ा। सोक्रेटस का कहना था कि "जो मेरे प्रति अच्छे हैं उनके प्रति मैं भी अच्छा हूँ, जो मेरे प्रति अच्छे नहीं हैं उनके प्रति भी मैं अच्छा हूँ। कनफ्यूशियस का सिद्धान्त था कि मनुष्यों को दूसरों के प्रति वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जैसा व्यवहार वे स्वयं दूसरों के द्वारा अपने प्रति न चाहते हों। इन शिक्षाओं को गाँधीजी ने अपनाया।

इसके अतिरिक्त आधुनिक दार्शनिक जॉन रस्किन, डेविड थोरो तथा टालस्टाय के विचारों का गाँधीजी के जीवन पर गहरा प्रभाव था।

इसके अतिरिक्त एक अन्य दार्शनिक रामचन्द्रजी जो एक जौहरी, कवि तथा सुधारक थे का भी प्रभाव गाँधीजी के जीवन पर पड़ा। उनकी नैतिकता और धार्मिक प्रवृत्ति का प्रभाव गाँधी जी को प्रभावित किया। गाँधीजी ने स्वयं लिखा था "स्वर्गीय रामचन्द्र के बाद टालस्टाय तीन आधुनिक मनुष्यों में एक हैं। जिन्होंने मेरे जीवन पर सबसे अधिक आध्यात्मिक प्रभाव डाला है और तीसरे रस्किन थे।

Scanned with CamScanner